"क्रांतिवीर दत्ताजीराव पाटील (तात्या) का स्वातंत्रता के लिए योगदान"

प्रा.डॉ.सौ.वाघ शकुंतला प्रताप
अध्यक्ष- हिंदी विभाग,
कला,वाणिज्य व विज्ञान
महाविद्यालय, पलूस
Mob.- 9860678180
Email-wa waghsp123@gmail.com

शोध सार-

महाराष्ट्र में भी इस आंदोलन ने जोर पकड़ लिया 'चले जाओ' आंदोलन भूमिगत रूप से शुरू हुआ। महाराष्ट्र राज्य इस आंदोलन में अग्रेसर था। महाराष्ट्र में मुख्यता: सातारा, सांगली में स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करनेवालों में क्रांतिसिंह नाना पाटील ने प्रति सरकार की कल्पना अपना ली थी। सांगली जिला दक्षिणी संस्थाओं में से एक महत्वपूर्ण जिला है। "इस जिलों में अनेक क्रांतिकारियों की जन्मभूमि है जैसे क्रांतिसिंह नाना पाटील, क्रांतिवीर नागनाथ (अण्णा) नायकवडी, क्रांति अग्रणी भाई जी. डी. (बापू) लाड, पद्मभूषण वसंतदादा पाटील, जैसे अनेक देशभक्तों ने इस आंदोलन में सहयोग दिया।

बीज शब्द- स्वतंत्रता, आंदोलन, क्रांतिसिंह।

प्रस्तावना-

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में 'भारत छोड़ो' आंदोलन का महत्वपूर्ण स्थान है। गांधी जी ने जो नारा लगाया था 'करो या मरो' इससे प्रभावित होकर भारतीय नागरिक इस संग्राम में सम्मिलित हुए थे सन 1942 के आंदोलन में कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को स्वयं स्वयं का नेतृत्व करने का संदेश गांधी जी ने दिया था। 8 अगस्त 1942 को 'गोवालिया टैंक' मैदान से 'छोड़ो भारत' अथवा 'चले जाओ' के ठराव को मान्यता दी गई। 9 अगस्त, 1942 को महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू जैसे अनेक नेताओं को जेल में भर्ती किया गया। पूरे हिंदुस्तान में असंतोष फैल गया। महाराष्ट्र में भी इस आंदोलन ने जोर पकड़ लिया 'चले जाओ' आंदोलन भूमिगत रूप से शुरू हुआ। महाराष्ट्र राज्य इस आंदोलन में अग्रेसर था। महाराष्ट्र में मुख्यता: सातारा, सांगली में स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करनेवालों में क्रांतिसिंह नाना पाटील ने प्रति सरकार की कल्पना अपना ली थी। सांगली जिला दक्षिणी संस्थाओं में से एक महत्वपूर्ण जिला है। "इस जिलों में अनेक क्रांतिकारियों की जन्मभूमि है जैसे क्रांतिसिंह नाना पाटील, क्रांतिवीर नागनाथ (अण्णा) नायकवडी, क्रांति अग्रणी भाई जी. डी. (बापू) लाड, पद्मभूषण वसंतदादा पाटील, जैसे अनेक देशभक्तों ने इस आंदोलन में सहयोग दिया।"[1]

"दत्तू तात्या का जन्म 19 अगस्त, 1911 को मिरज तहसिल के करोली(एम) गांव में हो गया।"2 इसके पिता का नाम बाळाजी और माता का नाम कमलाबाई था। इनकी प्राथमिक शिक्षा सोनी गांव में हो गई। इनका जन्म गांव करोली होते हुए भी सोनी इनकी कर्मभूमि बन गई। पढ़ाई के लिए बुआ के घर आए थे। बुआ की बेटी इंदुताई से इनका विवाह हो गया वे सोनी में घरजमाई बन गए। तात्या को गांव के लोग मान-सम्मान देते थे। वे गरीब लोगों से अच्छी दोस्ती करते थे। वे कार्यनिष्ठ, निर्भय व्यक्तित्त्व वाले थे। गरीब लोगों की समस्या समझ कर उन्हें न्याय देते थे। एक न्याय संस्था गांव में निर्माण की थी। इसके साथ-साथ सोनी में अनेक क्रांतिवीर निर्माण हो गए। अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने के लिए शक्ति निर्माण हो गई।

क्रांतिसिंह नाना पाटील के नेतृत्व में तात्या ने सन 1936 में सोनी में कांग्रेस की सभा का आयोजन किया गया। इस सभा का परिणाम यह हुआ कि क्रांति करने के लिए तात्या और उनके सहकारियोंने आंदोलन में सहभाग लेने की शपथ ले ली और खादी वस्त्र का उपयोग करने का निर्णय ले लिया। तात्या भूमिगत बनकर आज इधर तो कल उधर घूमते थे। एक जगह ठहरते नहीं थे। सोनी गांव

के पास गोधडोबा और दंडोबा का पर्वत है वहां रहते थे। सन 1942 के आंदोलन में अंग्रेजों के प्रति कार्य किया इसलिए उन्हें डेढ़ साल की सजा हो गई किंतु वे पकड़े नहीं गए। इन्हें पकड़ने के लिए अंग्रेजी सरकार ने दिन-रात चप्पे-चप्पे छान लिए। "28 अगस्त, 1942 को सोने में डॉक्टर वाय. के. सोहनी जी ने सभा ले ली। उन्होंने आवाहन किया कि मामलेदार कचेरी के ऊपर तिरंगा लहराना चाहिए।"3 इससे प्रेरित होकर तात्या ने सोनी गांव की चावड़ी पर तिरंगा लहराया। "3 सितंबर, 1942 को तासगाव में एक जुलूस निकाला सोनी गांव के आसपास के लोग इस जुलूस में सम्मिलित हो गए थे। गांधी जुलुस था। इसमें शांतता थी। यह जुलूस दीवाणी कोर्ट पर पहुंच गया। वहाँ के तत्कालीन न्यायाधीश ने जुलूस की ताकत देखकर स्वयं गांधी टोपी पहनी और वहाँ तिरंगा लहराया। यह जुलूस मामलेदार की कचहरी पर चला, मामलेदार ने भी गांधी टोपी पहनी और 'वंदे मातरम' कहकर तिरंगा लहराया गया।"4

वसंतदादा अपने सहयोगियों को हथियार देकर तैयार रखते थे। इसमें तात्या का भी सहयोग था। "तात्या हॅडग्रेनेडस लेकर सोनी को आ रहे थे। कवलापुर के तालाब के किनारे उनके हाथ से थैली खिसक गई और हॅडग्रेनेडस का स्फोट हो गया। इसकी कवलापूर गांव में जानकारी मिल गई। स्फोट की जानकारी पुलिस को भी मिल गई। जख्मी तात्या को पकड़कर सांगली जेल में बंदी बनाया गया।"5

सांगली पुलिस को इन क्रांतिकारियों ने तंग करके रखा था। वसंतदादा पाटील, हिंदूराव पाटील, वसंत सावंत, बाबूराव शेटे, गणपत कोळी आदि लोगों को सांगली जेल में रखा था। तात्या इनके पहले ही जेल में थे। जेल में रहकर हम लोग कुछ नहीं करेंगे ऐसा उन्हें लगता था। दिन में दो बार कैदीयों को प्रात: विधि के लिए बाहर निकाला जाता था। इसी समय इनकी चर्चा होती थी। इन्होंने जेल तोड़ने का निर्णय कर लिया और सांकेतिक भाषा का प्रयोग करने का निश्चय कर लिया। 24 जुलाई, 1943 को जेल तोड़ने का निर्णय हो गया। पुलिसों को निशस्त्र किया गया। सभी क्रांतिकारियों ने पुलिसों की बंदूके अपने हाथ में ले लि। सिर्फ 10 मिनट में इन्होंने जेल तोड़ने का कार्यक्रम कर दिया"6 पुलिस उन्हें पकड़ने के लिए इनका पीछा करती थी। सभी क्रांतिकारी कृष्णा नदी में डूब गए। अण्णासाहेब पत्रावले जी को गोली लगी और वह देश के लिए शहीद हो गए। वसंतदादा पाटील के कंधे पर गोली लगी वे पकड़े गए। दत्तू तात्या, जीनपाल खोत, बापू पाचोरे, वसंत सावंत तैरकर गणपति मंदिर के नजदीक आ गए और वहां से फरार हो गए। इस घटना के बारे में इंग्लैंड के असेंम्बली में चर्चा हो गई। जेल तोड़ने का खटला कोर्ट में न होते हुए जेल में ही हो गया। क्रांतिकारियों को 35 साल से ज्यादा सक्त मजूरी की सजा हो गई। भारत स्वतंत्र होने के बाद क्रांतिकारी मुक्त हो गए।

स्वतंत्रता मिलने के बाद सुराज्य करने के लिए तात्या ने विधायक कार्य किया। इस क्रांतिसुपुत्र को भारतीय स्वतंत्रता को 25 साल पूरा होने पर इनके योगदान से प्रभावित होकर 15 अगस्त, 1972 को स्व. पंतप्रधान इंदिरा गांधी जी ने ताम्रपत्र देकर सम्मानित किया। ऐसे महान क्रांतिकारी दत्तू तात्या का निधन 1975 को हो गया। दत्तू तात्या के नाम से लोग नारा लगाते थे "वीर दत्तू पाटील की जय"।7

तात्या का इतिहास याद रहे इसलिए उनके परिवार वालों ने शाहिर विभूति से एक पोवाडा निर्माण किया था। उसकी कई पंक्तियां इस तरह है-

करोली गांव के सुपुत ।।२।।
इनकी कर्मभूमि सोनी ।।२।।
भारत माता के स्वतंत्रता के लिए ।।२।।
उन्होंने अपना जीवन समर्पित किया जी हाँ जी हाँ।।२।।

निष्कर्ष-

स्वर्गीय दत्तू तात्या सोनीकर इनके आंदोलन के बारे में जानकारी बहुत कम है। सच कहूं तो दत्तू तात्या को स्वतंत्रता आंदोलन का उपेक्षित नायक मानना चाहिए। इनका कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। तात्या सर्वसाधारण परिस्थिति से आनेवाले हैं वे उच्च

कोटि के क्रांतिकारी माने जाते हैं। स्वतंत्रता के लिए अनेक गट निर्माण किए थे। सांगली के गट का नेतृत्व वसंतदादा पाटील करते थे। इसमें दत्तू तात्या का सक्रिय हिस्सा था। अंग्रेजों ने उनके परिवार को भी नहीं छोड़ा। दत्तू तात्या स्वतंत्रता संग्राम में प्रति सरकार में समर्पित भाव से काम करते थे। तात्या का कार्य उनका योगदान आज की पीढ़ी के सामने रखना हमारा उद्देश्य है। इन की प्रेरणा से हम कुछ सीख सकते हैं।

संदर्भ-

1- कोगनेळे विजय, देशभक्त धोंडीराम, सुचेता प्रकाशन, 2001, पृ-4
2- सुतार कृष्णा नायकू- हस्तलिखित डायरी (मराठी) गुंडेवाडी
3- डॉक्टर शिंदे आबासाहेब,साजस्पे प्रतिसरकार: प्रसंग आणि व्यक्ति, उषा प्रकाशन कोल्हापुर,1998,पृ-2
4- सुतार कृष्णा नायकू, हस्तलिखित डायरी, (मराठी) गुंडेवाडी
5- वहीं
6- पाटील हरीभाऊ, वि. क्रांतिची धगधगती ज्वाला, दत्तू तात्या, श्री चैतन्य प्रकाशन, 2005, पृ-13
7- सुतार कृष्णा नायकू, हस्तलिखित डायरी (मराठी) गुंडेवाडी